गठरी
Gathari

A creative collaboration between Artie Ramsodit, Sruthi Krishnan, Prakash Uday, and Indra Bangaru

आरती रामसोदित, श्रुति कृष्णन, प्रकाश उदय आ इंद्रा बंगारू के सह-सृजन

आरती रामसोदित, श्रुति कृष्णन, प्रकाश उदय और इंद्रा बंगारू का सह-सृजन

Between 1873 and 1916, approximately 34,000 Indians were transported across the Indian and Atlantic Oceans to work in Suriname as indentured labourers. The lives of their great-great grandchildren are threaded through India, Suriname, and the Netherlands. One such person is Dr. Artie Ramsodit, who in July 2024 travelled across northern India to trace the route of her ancestors. To document this journey, Dr. Ramsodit and Sruthi Krishnan undertook an artistic collaboration, joined by Prakash Uday and Indra Bangaru. Gathari was conceived as a semi-fictionalised series of illustrated letters written by a mother to her child back home, in English, Bhojpuri, and Hindi. It is an emotive attempt to learn, recover, and share stories that are hard to find, harder to hear, and essential for honouring the ancestors who once crossed oceans so we could now fly.

1873 से लेके 1916 तक, लगभग 34,000 भारतीयन के हिन्द आ अटलांटिक महासागरन के पार, सूरीनाम, गिरमिटिया मजूरन के रूप में काम करे खातिर ले जाइल गइल रहे। ओह लोग के कइक पीढ़ी बाद के पीढ़ी के जीवन आज भारत, सूरीनाम आ नीदरलैंड – तीनो से जुड़ गइल बा। अइसनके एगो शख्सियत, डॉ. आरती रामसोदित, जे जुलाई 2024 में, उनुकर पुरखालोग जवना राहे आपन सफर पुरावल, तवना के जोह में सँउसे उत्तर भारत के जतरा कइली। उनुका एह जतरा के दस्तावेज तइयार करे खातिर डॉ. रामसोदित आ श्रुति कृष्णन एगो कलात्मक सहयोग के कल्पना कइल लोग, आ आगे चल के प्रकाश उदय आ इंद्रा बंगारू – ईहो दूनो जन ओह से जुड़ गइल। एह 'गठरी' के एगो मतारी के तरफ से अपना संतति के अंग्रेजी, भोजपुरी आ हिंदी में लिखल चिट्ठियन के सचित्र, कुछ साँच आ कुछ सोचल, एगो लड़ी के रूप में गँठियावल गइल बा। ई ओह कथा-कहानिन के बारे में जाने के, उन्हनी के संगोरे के आ साझा करे के एगो भाव-भरल प्रयास-मतिन बा, जवना कथा-कहानिन के एक त पावले कठिन, सुन-गुन पावल ओकरो से कठिन। बाकिर, ई अपना ओह पुरखालोग के मान-सम्मान खातिर जरूरियो से जादे जरूरी, जवन पुरखालोग कबो जाने कतना साँसत सह के महासागरन के पार कइल। आज, अपना ओही पुरखा लोग के ऊहे बल, ऊहे बेंवत, कि हमन के खुला आकाश में आपन पाँख पसार के उड़ान के सकान भइल !

1873 और 1916 के बीच, लगभग 34,000 भारतीयों को हिन्द और अटलांटिक महासागरों के पार, सूरीनाम, गिरमिटिया मजदूरों के रूप में काम करने के लिए ले जाया गया था। उनकी अनेक पीढ़ियों के बाद जन्मी उनकी संतानों का जीवन आज भारत, सूरीनाम और नीदरलैंड से जुड़ा हुआ है। ऐसी ही एक शख्सियत हैं डॉ. आरती रामसोदित, जिन्होंने जुलाई 2024 में अपने पुरखों की यात्रा के मार्ग की खोज के लिए पूरे उत्तर भारत की यात्रा की। इस यात्रा का दस्तावेज तैयार करने के लिए डॉ. रामसोदित और श्रुति कृष्णन ने एक कलात्मक सहयोग की परिकल्पना की, जिसमें प्रकाश उदय और इंद्रा बंगारू भी जुड़ गए। 'गठरी' की परिकल्पना एक माँ की तरफ से अपनी संतति को अंग्रेजी, भोजपुरी और हिंदी में लिखे गए सचित्र पत्रों की एक अर्ध-काल्पनिक शृंखला के रूप में की गई थी। यह उन कहानियों के बारे में जानने, उन्हें अर्जित करने और साझा करने का एक भावनात्मक प्रयास है जिन्हें प्राप्त करना कठिन है और सुनना कठिनतर है, लेकिन जो उन पुरखों के सम्मान के लिए निहायत जरूरी हैं, जिन्होंने कभी महासागरों को पार किया था, इसलिए भी, कि उनकी संतानें खुले आकाश में उड़ान के लिए अपने पंख पसार सकें।

G.B.PANT SOCIAL SCIENCE INSTITUTE
(A Constituent Institute of University of Allahabad)
Jhusi, Prayagraj-211019
www.gbpssi.in

ISBN 978-81-942275-9-5

Cover Art : Indra Bangaru